हिन्दी (प्रतिष्ठा)/बी. ए. पार्ट -1/ अध्ययन सामग्री

डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय रहिका, मधुबनी

दिनांक : 02 04 2021

पत्र : द्वितीय / प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

'विद्यापति प्रेम और सौन्दर्य के अमर गायक हैं।' स्पष्ट करें

विद्यापति मूल रूप से एक श्रृंगारिक कवि हैं। वे मानवीय जीवन के प्रेम और सौन्दर्य के अमर गायक हैं। इनके काव्य में नायिका का शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक सफल चित्रण देखने को मिलता है। इनके काव्य का प्रेम - काव्य कह सकते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने काव्य में नायिका-भेद का बड़ा ही मनोरम चित्रण किया है। उन्होंने अपने काव्य में नारी सौन्दर्य की अनुपम व्याख्या की है। वे श्रृंगार के अंतर्गत रूप चित्रण में बारीकी से बहिरंग की विशेषताओं पर अपनी दृष्टि केन्द्रित की है।

प्रेम का मूल प्रेरक तत्व - सौन्दर्य और रूप है और उस सौन्दर्य और रूप का आश्रय यौवन है। यौवन और सौन्दर्य - समन्वित रूप ही प्रेम या रति है। रति श्रृंगार का स्थायी भाव है। विद्यापति एक श्रृंगारी कवि होने के कारण सौन्दर्य का पूर्ण एवं उत्कृष्ट चित्रण किया है। उन्होंने रूप और सौन्दर्य - चित्रण में अपना पूर्ण कौशल प्रदर्शित किया है। उन्होंने इस क्रम में अपने काव्यों में नख-शिख वर्णन, हाव-भाव प्रतिक्रिया, वेश-भूषा, संयोग एवं चेष्टाओं का वर्णन अपने काव्यों में किया है।

उदाहरणार्थ :—

जुगल सैल- सिम हिमकर देखल, एक कमल दुई जोति रे॥
फुलालि मधुरि फुल सिंदुर लोटाइलि, पाँति बइसालि गज-मोति रे ॥
आज देखल जत के पतिआएत, अपरुब बिहि निरमान रे॥
बिपरित कनक- कदलि तर सोभित, थल- पंकज अपरूप रे॥

दो कुच-रूपी पहाड़ों की सीमा पर मुख - रूपी चंद्रमा को देखा। मुख- रूपी कमल एक था पर आँखें रूपी ज्योतियाँ दो थीं। लाल ओठ फूल जैसे फुलाया था और लाल मसूड़े रूपी सिंदुर में गजमुक्ता की पंक्ति बैठाई हुई थी। फिर वे

आगे कहते है कि आज ... अनूप ... को
देखा है। जो इस संसार में कोई नहीं विश्वास करेंगा। फिर
वे जाँघ की उपमा केले के स्तंभों से देते हुए कहते है कि
उनके कमल रूपी पैरों उल्टे केले के स्तंभ रूपी जाँघों
पर स्थित है।

इस से स्पष्ट होता है कि विद्यापति की रचना में
प्राय: बाह्य रूप का ही चित्रण अधिक होता है।
नि:संदेह उनका मन बाह्य रूप-चित्रण में ही अधिक
रमा है। इसी प्रकार वे वय: संधि, सद्य: स्नाता, नख-
शिख, मिलन, नोक-झोंक, प्रेम-प्रसंग आदि के प्रसंग
के चित्रण में बाह्य रूपों का ही वे अधिक चित्रण
किए है। सद्य: स्नाता के वर्णन में नायिका के बहिरंग
का सूक्ष्म वर्णन करते हुए वे लिखते है—

कामिनि करए सनाने, हेरितहि हृदय हनए पँचबाने॥
चिकुर गरए जलधारा, जनि मुख-ससि डरें रोअए अँधारा॥

कुच-जुग चारु चकेवा, निअ कुल मिलत आनि कोन देवा॥
ते संकाएँ भुज पासे, बाँधि धएल उड़ि जाएत अकासे॥

यहाँ उन्होंने स्नान करती हुए नायिका का वर्णन करते हुए
उसके कुच और केश का उपमामयी ~~वर्णन~~ अनुपम
उल्लेख किया है।

कवि का मुख्य काव्य-विषय सौन्दर्य एवं
रूप वर्णन ही है।

निष्कर्षत: विद्यापति के काव्यों में अंतरंग की
अपेक्षा बहिरंग पर ही अधिक जमी है। उनके रूप-
चित्रण में कुच-वर्णन का आधिक्य है साथ ही वे नारी ~~उसका~~
~~मनोवैज्ञानिक निरूपण भी उनके काव्य अ नरी के~~ का
के मनोभावों का मनोवैज्ञानिक चित्रण भी करते है।
अर्थात वे अपने काव्यों में शरीर और मन दोनों
का ही चित्रण किया है। ~~इस तरह इसमें अतिशय~~
अत: विद्यापति प्रेम और सौन्दर्य के अमर
गायक है।